तर्ज- मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा

जो आशिक हैं पिया तेरे,नशे में झूमते रहते
न होते दूर इक पल भी,तुझे ही देखते रहते
1-है जिनकी ताम नज़र तेरी,
वह रहते मस्त नजारों में
न रहती होश कुछ उनको,डूब जाते बहारों में
नजर वो ही हमें दे दो,न अब कुछ और हैं चाहते
2- हुई गर भूल इक हमसे,
मेहरबां भी धनी तुम हो
हुकम को फिर हुकम दे दो,धनी चरणों में तुम ले लो
जुदायगी न सहन होती,यहीं फरियाद करते हैं
3- है निसवत हम पिया तेरी,
तो फिर क्यूं है ये रूसवाई
है देखा इश्क भी तेरा,और तेरी खुदाई भी
हार मानी पिया हमने,खेल अब तो उठा लेते
4- सितम अब इस जमाने के,
सहे हमसे नहीं जाते
जहां तुम हो वहां हम हैं,जुदा अब हम न रह पाते
लौट चलिए धाम अपने,जहां हम साथ हैं रहते

Nijanand App